उलट अंग न माय रे वालैया, कीजे रंग रसाल रे।
पल एक अमथी म थाओ जुआ, रखे कंठ बांहोडी टाल रे।। ६ ।।

हे वालाजी! हमारे अंग में खुशी समाती नहीं है। आप आनन्द कीजिए तथा एक क्षण के लिए भी हमसे अलग न हों और न हमारे गले से अपनी बांह ही हटाएं।

तम सामूं अमें ज्यारे जोइए, त्यारे जोर करे मकरंद रे।
बाथो बथिया लीजे रे वालैया, एम थाय आनंद रे।। ७ ।।

हे वालाजी! जब मैं आपको देखती हूं तो मुझे काम सताता है, इसलिए आप मुझे अपने साथ चिपटा लें तो अधिक आनन्द होगा।

रामत करतां आलिंघण लीजे, ए पण मोटो रंग रे।
साथ देखतां अमृत पीजे, एम थाय उछरंग रे।। ८ ।।

खेल में लिपटाने पर अधिक आनन्द आता है। सबके सामने जब आप अधरों का रस पिएंगे तो बेहद खुशी होगी।

आलिंघण लेता अमृत पीतां, विनोद कीधां घणां हांस रे।
कठण भीडाभीड न कीजे रे वालैया, मुंझाय अमारा स्वांस रे।। ९ ।।

वालाजी लिपटाते हैं। अधरों का अमृत पीते हैं। विनोद करते हैं और हंसी करते हैं। हे वालाजी! आप जोर से न दबाएं हमारी सांस इससे रुकती है।

।। प्रकरण ।। २५ ।। चौपाई ।। ५५८ ।।

छंदनी चाल

सखी एक भांत रे, मारो वालोजी करे छे वात रे।
लई गले बाथ रे, आंणी अंग पासरे, चुमन दिए चितसूं।। १ ।।

हे सखी! वालाजी एक निराले ढंग से बात करते हैं। पास में आकर गले से चिपटा लेते हैं और चुम्बन लेते हैं।

मारा वाला मांहें कल रे, अंगे अति बल रे।
रमे घणे बल, रंग अविचल, वल्लभ अति वितसूं।। २ ।।

हमारे वालाजी में एक विचित्र युक्ति है। अंग शक्ति से भरपूर हैं। ताकत से खेलते हैं। मस्ती अमिट है। यह इन सब गुणों की खान हैं।

आ जुओ तमे स्याम, करे केवा काम।
भाजे भूसी हाम, राखे नहीं माम, हरवे घणे हितसूं।। ३ ।।

हमारे वालाजी को देखो। कैसा काम करते हैं। हमारी चाहना पूर्ण करते हैं। कोई कमी नहीं रखते। तुरन्त ही भलाई की बात करते हैं।

मारा वालासुं विलास, स्यामा करे हांस।
सूधो रंग पास, करी विस्वास, जुओ जोपे खंतसूं।। ४ ।।

हमारे वालाजी से श्यामा महारानी हंसी और विलास करती हैं। उनमें दृढ़ विश्वास है और वह मस्ती से भरी हैं। उनको तुम ध्यान से देखो।

Nijanand App

स्यामा स्याम जोड, करतां कलोल।
रमे रंग रोल, थाय झकझोल, बंने एक मतसूं।।५ ।।

श्यामा-श्यामजी की जोड़ी किलोल कर रही है और आनन्द में मस्त है। दोनों एक ही विचार से आपस में लिपटे हैं। (लिपटे पड़े हैं)

बेहू सरखा सरूप, मेली मुख कूप।
पिए रस घूंट, अमृतनी लूट, लिए रे अनितसूं।।६ ।।

रस के दोनों स्वरूप एक से हैं। मुख को मुख से जोड़कर रस के घूंट पीकर अमृत जैसा आनन्द लूट रहे हैं जो निश्चित है।

आलिंघण लिए, रंग रस पिए।
बंने सुख लिए, लथबथ थिए, आ भीनी स्यामा पतसूं।।७ ।।

श्यामाजी और श्याम आपस में चिपक गए हैं। आनन्द का रस-पान कर रहे हैं। दोनों आलिंगन कर सुख ले रहे हैं। ऐसी अलमस्त श्यामाजी पति के साथ मस्त हैं।

इंद्रावती वात, सुणो तमे साथ।
जुओ अख्यात, बंने रलियात, रमतां इजतसूं।।८ ।।

हे मेरे साथजी! तुम श्री इन्द्रावतीजी की बात सुनो और देखो। वह कहती हैं कि यह दोनों विचित्र लीला में मग्न हैं और मर्यादा के अन्दर खेल रहे हैं।

।। प्रकरण ।। २६ ।। चौपाई ।। ५६६ ।।

राग सामेरी

रामत आंबानी कीजे मारा वालैया, आवी ऊभा रहो लगतां रे।
सखियो ज्यारे बल करे, त्यारे रखे कांई तमे डगतां रे।। १ ।।

हे वालाजी! आओ, खड़े रहो। हम आम की रामत खेलें। हे वालाजी! जो सखियां आपके चरण पकड़ कर लेटी हैं, उनको जब दूसरी सखियां खीचेंगी तो आप हिलना नहीं।

तमे आंबला ना थड थाओ, अमे चरण झालीने बेसूं।
मारो आंबो दहिए दूधे सीचूं, एम केहेसूं प्रदखिणा देसूं।। २ ।।

हे वालाजी! आप आम का तना बन जाओ। हम आपके चरण पकड़ कर बैठेंगे और 'अपने आम को दूध दही से सींच रही हूं' ऐसा कहकर परिक्रमा देंगे।

केटलीक सखियो आंबलो सींचे, अमे चरण तमारे वलगां।
द्रढ करीने अमे चरण ग्रह्या, जोइए कोण करे अमने अलगां।। ३ ।।

कुछ सखियां आम को सींच रही हैं और हम तुम्हारे चरण में लिपटी हैं। हमने इतनी मजबूती के साथ चरणों को पकड़ा है। अब देखते हैं कौन अलग करता है?

बल करीने तमे ऊभा रेहेजो, खससो तो हंससे तम पर।
जो अमे चरण ग्रही नव सकूं, तो सहु कोई हंससे अम पर।। ४ ।।

वालाजी! आप स्थिर होकर खड़े रहना। हटोगे तो हंसी आपकी होगी। यदि चरण हमसे छूट गए तो हंसी हमारी होगी।

Nijanand App